ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 144-146**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

अनंत संभावनाओं को समेटती 'हिन्दी'

डॉ0 रीना सिंह

आचार्य– हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी० जी० कॉलेज, बाराबंकी (उ०प्र०), भारत

Received-08.09.2025, Revised-15.09.2025, Accepted-20.09.2025 **E-mail: drreenasinghhindi@gmail.com**

सारांशः ***भक्ति आंदोलन के माध्यम से सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधकर स्वतंत्रता आंदोलन में राष्ट्रप्रेम की अलख, प्रत्येक भारतीय के हृदय में जागृत कर, स्वतंत्रता के गीत गाती हुयी, राजभाषा के रूप में, वैश्विक पटल पर अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराते हुए राष्ट्रभाषा की ओर बढ़ती हुयी अनेक चुनौतियों का सामना करती और अपने भीतर अपार संभावनाओं को तलाशती और समय के साथ स्वयं को तराशती और समय के साथ स्वंय को ढालती भाषा अर्थात् हिन्दी।***

एक भाषा के रूप में हिन्दी न सिर्फ भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और संस्कारों की खूबसूरत मिठास को अपने साथ समेटे, "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को जी रही है और इसीलिए दुनिया भर में हिन्दी भाषा को बोलने, समझने, लिखने वालों की एक बड़ी संख्या है। विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है–हिन्दी।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है और नियम समाज हो या फिर भाषा दोनों पर लागू होती है। यह परिवर्तन समाज और भाषा दोनों के लिए बेहद ही महत्वपूर्ण है। भाषा की बात करें तो यह परिवर्तन ही उस भाषा को और अधिक सामर्थ्यवान बनाता है और यही भाषा का विकास भी करता है। यदि कोई भाषा अपने भीतर नये शब्दों को प्रवेश नही करने देती, तो उसका विकास अवरूद्ध हो जायेगा और जिस भाषा में समायोजन की शक्ति नहीं है, तो एक न एक दिन वह भाषा इतिहास के पन्नों तक ही सीमित होकर रह जायेगी। ऐसे तमाम भाषाओं के उदाहरण हमारे पास है।

कुंजीभूत शब्द– **स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रप्रेम की अलख, वैश्विक पटल, संस्कृति, संस्कारों, वसुधैव कुटुम्बकम, भाषा का विकास।**

प्रास्ताविक– कबीर ने भाषा को 'बहता नीर' यूँ हीं नहीं कह दिया। जिस प्रकार बहता नीर अपने आस–पास के समस्त जलस्त्रोतों से जल लेकर और अधिक वेग और विस्तार के साथ बढ़ती है, ठीक उसी प्रकार भाषा भी विभिन्न स्त्रोतों से आये शब्दों से स्वंय को और समृद्ध करती उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर होती रहती है। इस बात को एक उदाहरण से और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है। सरस्वती नदी जो सिन्धु और गंगा से भी अधिक विशाल नदी थी और जिसकी गाथा ऋग्वेद के 6वें मण्डल में मिलता है, सरस्वती को ऋग्वेद में 'नदियों की अधिष्ठात्री देवी' कहा जाता है, कालान्तर में लुप्त हो गयी, क्यों? क्योंकि यमुना और सतलुज जैसी सहायक नदियों के जलस्त्रोतों से सरस्वती वंचित हो गई और अपना अस्तित्व खो बैठी और दूसरी ओर गंगा और सिंधु को अन्य नदियों का जल यथावत् मिलता रहा इसीलिए आज भी उनका अस्तित्व बना हुआ है। प्रसिद्ध सूफी कवि बाबा बुल्लेशाह लिखते हैं–'जोगी रवाँ रहे तो बेहतर, आबे–दरिया बहे तो बेहतर' अर्थात् सन्त का, जोगी का लगातार साधना के मार्ग पर चलते रहना और दरिया के पानी का बहते रहना, ही बेहतर होता है, जो बहता है वही जीवित है, जो रूकता है वह मर जाता है।

जिस भाषा में अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करते हुए अपना बनाने की क्षमता जितनी अधिक होगी, वह भाषा उतनी ही अधिक समृद्ध होगी। हिन्दी की विशेषता यह रही है कि उसने तुर्की, यूनानी, पुर्तगाली, स्पैनिश, अरबी, जर्मन, डच, चीनी आदि अनेक भाषाओं से हजारों शब्द लेकर अपनी शब्द–सम्पदा में वृद्धि की है। विश्व भर की शब्दावली को आत्मसात कर लेने के कारण ही आज हिन्दी का विश्वभाषा का रूप निर्मित हुआ और उत्तरोत्तर हो रहा है।

विषय–विस्तार– विश्वभाषा कहलाने की अधिकारिणी वही भाषा हो सकती है, जिसमें वैश्विक चेतना के साथ विश्व बोध भी है। इस दृष्टि से निश्चित रूप से विश्व मंच पर हिन्दी की पहचान और अस्तित्व दोनों ही मजबूत है। सार्क देशों अर्थात् भारत के पड़ोसी देशों का संगठन जिसमें नेपाल, भूटान, श्रीलंका, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव आदि में आज भी भारतीय संस्कृति की खुशबू और हिन्दी के प्रति प्रेम देखा जा सकता है। नेपाल के भानु भक्त आचार्य को नेपाली भाषा और हिन्दी भाषा के बीच 'पहला सेतु' माना जाता हैरू क्योंकि उनकी भाषा दृ संवेदन और काव्यधारा हिन्दी क्षेत्र से जुड़ती है। इसी तरह श्रीलंका में भी सिंघली और तमिल का प्रचार ज्यादा है उसके बावजूद 'हिन्दी निकेतन जैसी तमाम संस्थाएं हिन्दी पठनदृपाठन और लेखन को बढ़ावा दे रही हैं।

भारतवंशी बहुल राष्ट्रों में जहाँ लगभग डेढ़ सौ वर्षों में पूर्व भारतीय मजदूर अंग्रेज शासकों के नियंत्रण में 'गिरमिटिया' मजदूर के रूप में ले जाये गये थे और ये मजदूर फिर वही के होकर रह गए। मॉरीशस, फीजी, सुरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद आदि ये 'गिरमिटिया' अपने साथ रामायण, कबीर भजनावली, हनुमान चालीसा आदि महत्वपूर्ण ग्रन्थों के साथदृसाथ अपने क्षेत्र के विशेषकर अवध क्षेत्र के लोक साहित्य को अपने साथ ले आए। दिन भर की थकान के बाद किसी पेड़ के छाया में संध्याकाल एकत्रित होकर ये भजन एवंम् लोकगीत का सहारा लेकर अपनी थकान मिटाते। ज्यादातर गिरमिटिया अवध क्षेत्र से थे इसीलिए अवध क्षेत्र के लोक साहित्य ने भी इन देशों में हिन्दी के प्रचारदृप्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अप्रवासी भारतीय समाज अर्थात् ऐसा भारतीय नागरिक जो अपनी मातृभूमि छोड़कर रोजगार आदि की तलाश में दूसरे देशों में स्थायी रूप से जा बसा हो। यू० के०, अमेरिका, इंग्लैण्ड, कनाड़ा, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, जापान, चीन, थाईलैण्ड, पोलैण्ड, वियतनाम, बल्गारिया, फ्रांस जैसे अनगिनत देशों में भारत और भारतीयता की पहचान हिन्दी फलदृफूल रही है, भले ही ये अप्रवासी भारतीय, चाहे पंजाबी हो या गुजराती, मराठी, तमिल आदि लेकिन विदेशों में ये केवल हिन्दी भाषा ही है। भारत में भले राजनेताओं ने भाषिक विभाजन रेखा खींच रखी हो लेकिन विदेशों में हिन्दी भारतीयता का पर्याय है। इन देशों में 170 से भी अधिक विश्वविद्यालय हैं जहाँ हिन्दी का पठनदृपाठन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद अधिक मात्रा में हो रहा है। हावर्ड विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय जैसे अनेक विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग में भाषा शिक्षण, साहित्यिक शोध, अनुवाद, सांस्कृतिक अध्ययन, आधुनिक तकनीकी प्रयोगों पर लगातार कार्य हो रहा है, अर्थात् हिन्दी की उपस्थिति वैश्विक परिदृश्य में दिन पर दिन बढ़ती चली जा रही है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की व्यापकता का दूसरा महत्वपूर्ण कारण है कि हमने विभिन्न विचारधाराओं और दर्शनों के आदान–प्रदान में भी कोई संकोच नहीं दिखाया। जैसे भारत के शैव दर्शन, पुष्टिमार्ग, कबीर दर्शन, रहस्यवाद, गांधी दर्शन, आदि का प्रभाव पश्चिम के देशों में और अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, स्वच्छदतावाद, मनोविश्लेषणवाद आदि का प्रभाव हिन्दी जगत पर पड़ा।

जैसे शैवमत भारत का प्राचीनतम दर्शन है। प्रकृति के भयावह रूप को देखकर मानव ने रुद्र की परिकल्पना की और फिर शिवत्व अर्थात मंगल की कामना भी और आज यही दर्शन देश–विदेश में व्याप्त है। अमेरिका, ब्रिटेन, नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया आदि देशों पर भारत के शैवमत का गहरा प्रभाव रहा है। कामायनी में प्रसाद ने इसी शैवमत की चर्चा करते हुए आनंदवाद और समरसता से जोड़ा है:

समरस ये जड़ या चेतन, संदूर साकार बना था।
चेतनता एक विलसती आनंद अखंड घना था।।[1]

वास्तव में यही आनंदवाद विश्व विभीषिका का सार्वभौम मुक्तिद्वार है ।

इस शैव दर्शन ने यूरोप और अमेरिका के कई विद्वानों को गहराई से प्रभावित किया, विशेष कर फ्रांस और जर्मनी, ब्रिटेन, अमेरिका के लेखकों को। उदाहरण के रूप में:

जर्मनी के हेनरिक जिग्मर की पुस्तक "फिलासफी आफ इंडिया" में शैव दर्शन का प्रभाव देखा जा सकता है। शिवत्व का अर्थ समझाते हुए लेखक कहते हैं कि निष्कलंक चेतना से ही आनंदवाद तक पहुंचा जा सकता है। साधक जब भीतर के अहं से ऊपर उठता है तब वह शिवाऽहम अर्थात आनंद का अनुभव करता है। जिग्मर की किताब में 'शिवदर्शन' मुख्यतः नटराज और शिव–शक्ति के माध्यम से आया है।

विदेशी विचारधारा की बात करें तो मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद स्वच्छंदतावाद हो या अस्तित्ववाद इन विचारधाराओं का प्रभाव हिन्दी साहित्य और साहित्यकारों पर पड़ा है। यूरोप की औद्योगिक क्रांति वैज्ञानिक अनुसंधान और मशीनीकरण ने मनुष्य के अस्तित्व को अंधकार में धकेल दिया तब डेनमार्क के सोरेन कीर्केगार्ड ने अस्तित्ववाद का मूलाधार वैयक्तिक स्वच्छंदता पर मानते हुए मानव की पूर्ण स्वछंदता पर बल देते हुए जीवन की निरर्थकता का अनुभव करते हुए पूर्णतः वैयक्तिक स्वच्छंदता पर बल दिया। इस विचारधारा का हिन्दी के कुछ लेखकों पर प्रभाव पड़ा। जिनमें कुंवरनारायण, अज्ञेय प्रमुख है:

किंतु हम हैं द्वीप,
हम धारा नहीं है
स्थिर समर्पण है
हमारा/हम बहते नहीं हैं
क्योंकि बहना रेत होना है
हम बहेंगे तो रहेंगे ही नहीं।[2]

इस तरह स्पष्ट है कि पश्चिम से अनेक विचारधारा समय–समय पर हिन्दी में आयी, जिनको हिन्दी के रचनाकारों ने प्रायः अपने देशकाल के अनुरूप आत्मसात् किया। इसके सहारे भी हिन्दी भाषा विश्व बोध से आज भी जुड़ी है। हिन्दी को विश्वव्यापी बनाने में तीसरा महत्वपूर्ण कारण है तकनीकी क्रांति।

हिन्दी और भारतीय भाषाओं को ऐसे युवाओं का इंतजार है जो अपनी भारतीयता को उसकी भाषा, उसकी परंपरा, उसकी संस्कृति के साथ समग्रता में स्वीकार करेंगें। जिनके लिए परंपरा और संस्कृति एक बोझ नही, बल्कि गौरव का कारण होगी। यह नौजवानी आज कई क्षेत्रों में सक्रिय दिखती है, खासकर सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया में, जिन्होंने इस भ्रम को तोड़ दिया कि सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया में बिना अंग्रेजी के गुजारा नहीं है। यही लोग ही हममें भरोसा जगा रहे हैं। आज भरोसा जगाते ऐसे कई दृश्य हैं, जिनके श्रीमुख और कलम से व्यक्त होती हिन्दी देश की ताकत है।[3]

पूरी दुनिया में यह भ्रम फैलाया गया कि कंप्यूटर और इंटरनेट से ज्ञान अर्जन का एकमात्र स्त्रोत अंग्रेजी भाषा है और जो अंग्रेजी नहीं जानेगा वह ज्ञान के इस अक्षय कोष से वंचित रह जाएगा लेकिन हिन्दी इस भ्रम को झुठलाते हुए अपनी गतिशीलता एवं समय के साथ अनुकूलन की अपनी प्रकृति से इंटरनेट से भी अपना तदात्मय बैठा लिया है। हिन्दी का पहला वेब पोर्टल 1990 में अस्तित्व में आता है और हिन्दी इंटरनेट की राह देख रहे भारत वासियों के लिए यह किसी आश्चर्य से कम न था। इंटरनेट पर हिन्दी का सफर भले ही रोमन लिपि से प्रारंभ होता है लेकिन धीरे–धीरे यह सफर देवनागरी लिपि तक पहुंच जाता है। आज इंटरनेट पर हिन्दी साहित्य से संबंधित अनेक पत्र–पत्रिकाएं देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं। इंटरनेट के बढ़ते प्रयोग को देखकर हिन्दी के अनेक प्रकाशकों और संपादकों ने अपनी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के ऑनलाइन संस्करण जारी करने प्रारंभ कर दिए हैं आज हिन्दी के 15 से भी अधिक सर्च इंजन है जो किसी भी वेबसाइट का चंद मिनिटों में अनुवाद करके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं और अब हम चार कदम आगे AI की दुनिया में आ गए हैं। हिन्दी अपनी ऊर्जा से डिजिटल क्रांति के साथ सामंजस्य बनाते हुए विश्वमंच पर देश का गौरव बढ़ाएगी।

मानव सभ्यता के इतिहास में शक्ति का केंद्र हमेशा बदलता रहता है। कभी शारीरिक बल महत्वपूर्ण था तो कभी भक्ति, सिद्धियाँ, तंत्र–मंत्र इत्यादि तो कभी मशीनी शक्तियां केंद्र में रही तो कभी सूचना– क्रांति का दौर रहा और अब हम उस युग में प्रवेश कर गए हैं जहां मानव बुद्धि की जगह लेने कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI आ गई है। हिन्दी के विकास में AI निश्चित रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा यह तय है। भारत और विश्व में करोड़ों लोग हिन्दी बोलते हैं और लिखते हैं इसीलिए हिन्दी को तकनीकी रूप से और अधिक समृद्ध करने के लिए हिन्दी (LLM) Large Language Model एक प्रकार से AI आधारित भाषा मॉडल तैयार किया गया हैं। इसका काम है, मानव भाषा को समझना और संवाद करना। निश्चित रूप से हिन्दी LLM भारतीय ज्ञान–परंपरा को वैश्विक मंच पर मजबूती प्रस्तुत करने का सेतु बनेगा। यह मॉडल विशाल मात्रा में हिन्दी पुस्तकों, समाचार पत्रों, वेबसाइटो, सोशल मीडिया, पोस्ट्स, कहानियाँ और सरकारी दस्तावेजों पर प्रशिक्षित होते हैं।

हिन्दी LLM के मुख्य कार्य–

1. अनुवाद हिन्दी– अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं
2. प्राकृतिक संवाद(Chatbots) जैसे ग्राहक सेवा शिक्षा या स्वास्थ्य में हिन्दी चैटबॉट।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-III, Issues-37, YEAR- July-Sept. 2025

3. शिक्षा प्रशासन, तकनीक, विज्ञान, न्याय व्यवस्था और मनोरंजन को आम लोगो तक उनकी मातृभाषा में उपलब्ध कराया जाएगा।

शोध के क्षेत्र में हिन्दी स्स्ड महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए प्राचीन ग्रंथों, शास्त्रों और साहित्य का अनुवाद और व्याख्या करेगा। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की जानकारी हिन्दी में सरल बनाकर प्रस्तुत करेगा हिन्दी और उनकी बोलियों का डिजिटल दस्तावेजीकरण करेगा साथ ही हिन्दी LLM के जरिए भारतीय भाषाओं एवं विदेशी भाषाओं में लिखे शोध को एक दूसरे से अनुवाद के माध्यम जोड़ने का महत्वपूर्ण करेगा। AI हिन्दी के विकास में और भी संभावनाओं के द्वार खोलेगा।

इन उपलब्धियों के साथ हिन्दी के सामने कई चुनौतियां भी हैं। पहली चुनौती तो अंग्रेजी के वर्चस्ववाद की ही है। कमतरी का बोध कराने के लिए न केवल भारत में बल्कि विश्वमंचों पर भी हिन्दी को कमतर आँकने का षड्यंत्र रचा जा रहा है। एक वह दौर था जब भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई संयुक्त राष्ट्र संघ जो दुनिया की सबसे बड़ी पंचायत मानी जाती है अपना भाषण हिन्दी में बड़े गर्व के साथ देते हैं और उन्हीं की विरासत माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी गुजराती भाषी होने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय मंचों से हिन्दी में ही अपनी बात साझा कर चुके हैं। श्यामा प्रसाद मुखर्जी जोकि बांग्ला भाषी थे, महात्मा गांधी जो गुजराती भाषी थे, लोकमान्य तिलक जो मराठी भाषी थे, गोपाल स्वामी अय्यंगर जो तमिल भाषी थे सभी एक कंठ से हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में लगे थे। तो दूसरी ओर दक्षिण और महाराष्ट्र के कुछ लोग केवल अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत करने के लिए जाति, क्षेत्र और भाषा के मुद्दों पर भारतवासियों के मन में कटुता पैदा कर रहे हैं। जिस हिन्दी भाषा को अंग्रेजों के खिलाफ एक अस्त्र के रूप में प्रयोग करने का आह्वान किया था हमारे महाराष्ट्र के एक सपूत (श्रीमान पेठें) ने कहा था देश की एकता के लिए एक भाषा की जरूरत है और वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है। इसलिए भाषा की राजनीति से बचना होगा जिससे कि हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिला सकें। व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित की बात सोचनी होगी। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने तो यहाँ तक कह दिया ''सारे देश में एक प्रधान भाषा का प्रचार अब भी अत्यंत आवश्यक है और आगे भी अत्यंत आवश्यक होगा और यह भाषा हिन्दी के सिवा और कोई नही हो सकती।[4]

अब सवाल है कि अंग्रेजो के वर्चस्ववादी अहंकार को तोड़ने का क्या उपाय है तो जवाब है 'बाजार'। विदेशी कंपनियों ने भारत में अपना कारोबार बहुत बढ़ा लिया है। भारत विदेशी कंपनियों के लिए बहुत बड़ा बाजार है, इसीलिए ये कंपनियाँ अपने उत्पाद विक्रय करने के लिए हिन्दी विशेषज्ञों की खोज में लगी है क्योंकि कॉरपोरेट जगत को यह समझ में आ चुका है कि अगर गांव–गांव तक पहुंच बनानी है, तो हिन्दी को अपनाना ही होगा और ये रोजगार का एक महत्वपूर्ण माध्यम हो सकता है।

भारत की आर्थिक प्रगति को देखते हुए यह अंदाजा लगाना गलत ना होगा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संपर्क की जो दस भाषाएँ होंगी उनमें हिन्दी शामिल रहेगी। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह भी है बहुराष्ट्रीय कम्पनियां अपने उत्पादों के प्रचार– प्रसार को बढ़ावा देने के लिए भारतीय संस्कृति और परंपराओ के अनुसार विज्ञापन आदि बनाना शुरू कर दिया हैं। विज्ञापन निर्माता हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं का प्रयोग कर बाजार बढ़ा रहा हैं। इस तरह विदेशी कंपनियाँ द्वारा यह रणनीति अपनायी जा रही है वह हिन्दी भाषा को व्यावसायिक भाषा के रूप में भी स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, जैसे Pepsico कहती है 'ये दिल मांगे मोर'

Kit - kat – का 'ब्रेक तो बनता है'

Surf Excel 'दाग तो अच्छे है' जैसे विज्ञापन यह सिद्ध करते हैं कि विदेशी कंपनियों द्वारा भारतीयों तक पहुँचने के लिए हिन्दी ही एक मात्र माध्यम है।

निपुणता और दक्षता के लिए ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बहुभाषावाद और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए 'त्रि–भाषा सूत्र' दिया है। हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रमों में बदलाव किया जा रहा है। जिससे हिन्दी का विद्यार्थी जब एम०ए०, पी–एच०डी० करके बाहर आए तो रोजगार के तमाम अवसर उसे उपलब्ध हो सके। इसके लिए जरूरी यह भी है कि हिन्दी के पाठ्यक्रमों में भाषा+ तकनीक+व्यावहारिक प्रशिक्षण का संतुलन होना चाहिए। ई– कंटेंट क्रिएशन/पॉडकास्ट, स्क्रिप्टिंग, विज्ञापनों के लिए कंटेंट क्रिएटर, एंकरिंग और डिजिटल कम्युनिकेशन की व्यवहारिक ट्रेनिंग भी दी जाए साथ ही पाठ्यक्रमों में शामिल भी किया जाए।

निष्कर्षः हिन्दी के पाठ्यक्रमों को रोजगार उन्मुख करने के प्रयासों को और अधिक बल प्रदान करना होगा। पत्रकारिता, राजभाषा अधिकारी, अध्यापन के क्षेत्र में, समाचार वाचन के रूप में, हिन्दी के विद्यार्थी हिन्दी भाषा में निपुणता व दक्षता प्राप्त करके अपने लिए रोजगार के संभावनाएं तलाश कर सकते है।

हिन्दी के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं में असीम अवसरों की संभावनाएँ हैं, क्योंकि आने वाले दिनों में भाषा वही चलेगी, जो डिजिटल प्लेटफॉर्म पर चल सके और यह डिजिटल प्लेटफॉर्म पर प्राकृतिक रूप से चल सके, यानी नैचुरल लैंग्वेज को आर्टिफिशियल लैंग्वेज को ऊपर रखने की स्थिति जिसमें हो। हिन्दी सहित सभी भारतीय भाषाओं का लाख विरोध–प्रतिरोध किया जाए, लेकिन उनका जो स्ट्रक्चर संस्कृत से प्राप्त है, वह उस दिशा में अभी सैकड़ो वर्ष तक छलाँग लगाने के लिए मानवजाति के लिए पर्याप्त है। इस नाते हमारे पास सौ वर्ष की बड़ी संभावनाएं हैं।[5]

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी में संभावनाएं बहुत हैं, समस्या इसके प्रयोग की ही है। यदि हिन्दी के प्रयोग को उचित स्थान दिया जाए, तो सचमुच यह विश्व के लिए एक शानदार और लोकप्रिय भाषा के रूप में और अधिक शक्तिशाली हो सकती है और इसे राष्ट्रभाषा एवं संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने का हमारा सपना साकार हो सकता है। हिन्दी का भविष्य अनन्त संभावनाओं को समेटे है और हिन्दी कभी भी खतरे में नहीं रही और न रहेगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जयशंकर प्रसादः कामायनी ; आनन्द सर्ग, पृष्ठ संख्या–128.
2. अज्ञेयः नदी के द्वीप; कविता कोश से साभार।
3. प्रो० संजय द्विवेदीः स्वदेश् ज्योति समाचार पत्र, भोपाल Sep 14,2025, पृष्ठ संख्या–04.
4. परिषद–पत्रिका, अप्रैल 2005, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पृष्ठ–118.
5- रजनीश कुमार शुक्लः भारतीय ज्ञान परंपरा, पृष्ठ–100.

*****